संकटमोचन हनुमान अष्टक

बाल समय रवि भक्षि लियो तब, तीनहुं लोक भयो अंधियारों |

ताहि सो त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सों जात न टारो |

देवन आनि करी बिनती तब, छाड़ि दियो रवि कष्ट निवारो |

को नहीं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो |

को नहीं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो |**1**|

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो |

चौंकि महामुनि साप दियो तब, चाहिए कौन बिचार बिचारो |

कैद्विज रूप लिवाय महाप्रभु, सो तुम दास के सोक निवारो |

को नहीं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो |**2**|

अंगद के संग लेन गए सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो |

जीवत ना बचिहौ हम सो जु, बिना सुधि लाये इहाँ पगु धारो |

हेरी थके तट सिन्धु सबै तब, लाए सिया-सुधि प्राण उबारो |

को नहीं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो |**3**|

रावण त्रास दई सिय को तब, राक्षसि सो कही सोक निवारो |

ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाए महा रजनीचर मारो |

चाहत सीय असोक सों आगि सु, दै प्रभुमुद्रिका सोक निवारो |

को नहीं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो |**4**|

बान लग्यो उर लछिमन के तब, प्राण तजे सुत रावन मारो |

लै गृह बैद्य सुषेन समेत, तबै गिरि द्रोण सु बीर उपारो |

आनि संजीवन हाथ दई तब, लछिमन के तुम प्रान उबारो |

को नहीं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो |5|

रावन युद्ध अजान कियो तब, नाग कि फांस सबै सिर डारो |

श्री रघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह संकट भारो |

आनि खगेस तबै हनुमान जु, बंधन काटि सुत्रास निवारो |

को नहीं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो |6|

बंधु समेत जबै अहिरावन, लै रघुनाथ पताल सिधारो |

देवनहिं पूजि भली विधि सों बलि, देउ सबै मिलि मन्त्र विचारो |

जाये सहाए भयो तब ही, अहिरावन सैन्य समेत संहारो |

को नहीं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो |7|

काज किये बड़ देवन के तुम, बीर महाप्रभु देखि बिचारो |

कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसो नहिं जात है टारो |

बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कछु संकट होए हमारो |

को नहीं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो |8|

|| दोहा ||

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर |

बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर ||

www.hanumanchalisalyric.com